पंचलाइट समीक्षा

पंचलाइट फणीश्वरनाथ 'रेणु' की आँचलिक कहानी है। ग्रामीण जीवन पर आधारित है। इसकी समीक्षा इस प्रकार है.

कथावस्तु / कथानक :-

पंचलैट (पंचलाइट) कहानी के माध्यम से ग्रामवासियों की मनोस्थिति की वास्तविक झाँकी प्रस्तुत की है। इस कहानी में यह दर्शाया गया है

Arunesh sir

कि किस प्रकार आवश्यकता बड़े-बड़े अवगुण या निषेध अथवा रूढ़िगत संस्कार को अनावश्यक सिद्ध कर देती है।

महतो टोली के लोग पंचलाइट खरीद तो लाते हैं, परन्तु जलाना नहीं जानते हैं। इस टोली के लिए यह अपमान की बात है। समस्या के समाधान के लिए मुमरी अपने प्रेमी गोधन जिसका हुक्का पानी बंद है उसके बारे में बताती है। गोधन आता है और पंचलैट जला देता है। गाँव के लोगों में खुशी की लहर दौड़ जाती है। सरदार गोधन के सात खून माफ कर देता है। सारे प्रतिबन्ध हटा लिए जाते हैं। मुनरी की माँ गुलरी

Arunesh sir

काकी रात के भोजन पर उसे आमंत्रित कर लेती है। गोधन व मुनरी का प्रेम फिर से हरा भरा हो जाता है।

पात्र तथा चरित्र-चित्रण :

प्रस्तुत कहानी के केन्द्र में अंचल या क्षेत्र विशेष है। कोई भी पात्र कहानी के केन्द्र में नही है। इसमें सर्वाधिक महत्वपूर्ण एवं प्रमुख पात्र गोधन है। कहानी में सरदार, दीवान, मुनरी की माँ, गुलरी काकी, छड़ीदार, फुटँगी झा आदि एक वर्ग के पात्र है जबकि गोधन' एवं मुनरी

Arunesh sir

दूसरे वर्ग के। लेखक ने ग्रामीण समूह के चरित्र को उभारने में सफलता प्राप्त हुई है।

कथोपकथन या संवाद :-

पंचलाइट' के संवाद सरल, रोचक, स्वाभाविक एवं पात्रानुकूल हैं। संवादो के माध्यम से ग्रामीण अंचल की रूढ़िवादिता, अज्ञानता पर प्रकाश डाला है। जैसे-

Arunesh sir

"मुनरी ने कनेली के कान में बात डाल दी कनेली-कनेली चिगो, चिध, चिन। कनेली मुस्कराकर रह गयी - गोधन तो बन्द है। मुनरी बोली तू कहे तो सरदार से गोधन जानता है पंचलाइट बालना।"

अत: संवाद पात्रानुकूल एवं स्वाभाविक है', संवादों में लेखक सफल रहा है।

Arunesh sir

देशकाल एवं वातावरण :-

रेणु की पंचलाइट कहानी ग्रामीण परिवेश की कहानी है। बिहार के ग्रामीण अंचल का चित्र प्रस्तुत किया गया है, ग्रामीणों के आचार-विचार एवं 'अन्धविश्वासों का भी चित्रण हुआ है।

Arunesh sir

भाषा-शैली :

इस कहानी की भाषा बिहार के ग्रामीण अंचल में बोली जाने वाली 'जन भाषा है। जैसे- "एक नौजवान ने आकर सूचना दी राजपूत टोली के

लोग - हंसते हँसते पागल हो रहे हैं। कहते हैं, कान पकड़कर पंचलैट के सामने पाँच बार उठो-बैठो तुरन्त जलने लगेगा।"

उद्देश्य:-

रेणु जी ने इस कहानी में यह प्रेरणा दी है कि आवश्यकता बड़े-बड़े रूढिगत संस्कारों को भी अनावश्यक बना देती है। जैसे गोधन के एक गुण के कारण सारे प्रतिबंध हटा दिए जाते हैं।

Arunesh sir

शीर्षक: –

कहानी कला के तत्वों के आधार पर पंचलाइट एक सफल कहानी सिद्ध होती हैं। सारी घटनाएँ पंचलाइट के इर्द गिर्द घूमती है। अंत: शीर्षक का नामकरण सार्थक सिद्ध होता है।

Arunesh sir

[गोधन का चरित्र चित्रण]

गोधन 'पंचलाइट' कहानी का प्रमुख पात्र है। इसे कहानी का नायक कहाजाना भी उचित है। इसकी चारित्रिक विशेषताएँ इस प्रकार हैं-

Arunesh sir

1. युवक की स्वाभाविक प्रकृति:-

प्रत्येक युवक की अपनी कुछ स्वाभाविक प्रवृत्तियाँ होती है। गोधन भी उसी तरह एक लापरवाह एवं मनचला युवक है, वह सलीमा का

सलम- सलम वाला गाना गाता है और मुनरी से प्रेम करता है। वह अल्हड़ ग्रामीण युवा है।

Arunesh sir

2. गुणवान व्यक्तित्व:

गोधन अशिक्षित है परन्तु में गुणों का अभाव नहीं है। पूरे महतो टोली में एक मात्र ऐसा वह व्यक्ति है जो पेट्रोमेक्स जलाना जानता है। वह अत्यन्त चतुर व्यक्ति है। वह स्पिरिट की जगह नारियल का तेल प्रयोग करके पंचलाइट जला देता है।

3. स्वाभिमानी व्यक्ति :

गोधन स्वाभिमानी प्रवृत्ति का युवा है। उसका हुक्का पानी बंद था। इसीलिए छड़ीदार के बुलाने पर मना कर देता है। जिस गुलरी ने उसे सजा सुनवाई थी, उसी के मनाने वह आता है।

Arunesh sir

4. समाज की प्रतिष्ठा के प्रति संवेदनशील:

गोधन समाज की प्रतिष्ठा के प्रति अत्यधिक संवेदनशील है, वह अपने अपमान को भुलाकर अपनी महतो टोली की इज्जत के लिए पंचलाइट बलाने जाता है।

Arunesh sir

5. निर्भीक स्वभाव वाला :-

गोधन स्वभाव से निडर है। वह बिना डरे मुनरी के प्रति प्रेम को व्यक्त करता है। ग्रामीण परिवेश में पलने के बावजूद भी वह आधुनिकता की ओर बढ़ता है।

इस प्रकार हम देखते हैं, कि गोधन बुद्धिमान, निर्भीक) मनचला, 'निर्भीक, मनचला, एवं स्वाभिमानी व्यक्तित्व का धनी युवा है।

Arunesh sir

पंचलाइट कहानी का उद्देश्य

'पंचालाइट' कहानी के लेखक फणीश्वरनाथ रेणु' जी हिन्दी – जगत् के सुप्रसिद्ध आंचलिक कथाकार हैं। 'पंचालाइट' भी बिहार के आंचलिक परिवेश की कहानी है। इस कहानी के द्वारा 'रेणु' जी ने ग्रामीण अंचल का वास्तविक चित्र खींचा है। गोधन के द्वारा पेट्रोमैक्स जला देने पर उसकी सभी गलतियाँ माफ कर दी जाती हैं; उस पर लगे सारे प्रतिबन्ध हट जाते हैं तथा उसे मनचाहा आचरण करने की छूट भी मिल जाती है।

Arunesh sir

इससे स्पष्ट होता है कि आवश्यकता बड़े-से-बड़े रूढिगत संस्कार और परम्परा को व्यर्थ साबित कर देती है। इसी केन्द्रीय भाव के आधार पर कहानी के एक महत्त्वपूर्ण उद्देश्य को स्पष्ट किया गया है।

इस प्रकार 'पंचलाइट' जलाने की समस्या और उसके समाधान के माध्यम से कहानीकार ने ग्रामीण मनोविज्ञान का सजीव चित्र उपस्थित कर दिया है। ग्रामवासी जाति के आधार पर किस प्रकार टोलियों में विभक्त हो जाते हैं और आपस में ईर्ष्या-द्वेष युक्त भावों से भरे

Arunesh sir

रहते हैं, इसका बड़ा ही सजीव चित्रण इस कहानी में हुआ है। रेणु जी ने यह भी दर्शाया है कि भौतिक विकास के इस आधुनिक युग में भी भरतीय गाँव और कुछ जातियाँ कितने अधिक पिछड़े हुए हैं। कहानी के माध्यम से 'रेणु' जी ने अप्रत्यक्ष रूप से ग्राम- सुधार की प्रेरणा भी दी हैं।

Arunesh sir